AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

अगले पांच साल में भारत में तैयार हो जाएगा क्वांटम कंप्यूटर

देश का पहला सुपर कंप्यूटर बनाने वाले पद्मभूषण डॉ. विजय पांडुरंग का दावा

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। सुपर कंप्यूटर से भी कई हजार गुना ज्यादा क्षमतावान क्वांटम कंप्यूटर अब भारत का अगला पड़ाव है। आने वाले पांच सालों में यह तैयार हो जाएगा। यह दावा है भारत में सुपर कंप्यूटर के जनक कहे जाने वाले पद्मभूषण डॉ. विजय पांडुरंग भाटकर का।

डॉ. विजय पांडुरंग, सोमवार को होने वाले लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर लखनऊ आए हैं। दीक्षांत समारोह की पूर्व संध्या पर उन्होंने पत्रकारों से बात करते हुए बताया कि भारत क्वांटम कंप्यूटर की तैयारी में लगा है।

वार्ता के दौरान डॉ. विजय पांडुरंग।

बोले, सुपर कंप्यूटर और क्वांटम कंप्यूटर का उपयोग हर क्षेत्र में हो सकता है। मौसम, रक्षा, स्पेस और यहां तक कि आधुनिक कार से लेकर कई क्षेत्रों में इनका काफी उपयोग होगा।

एआई की चुनौतियों के लिए रहना होगा तैयार

डॉ. भाटकर के मुताबिक, विज्ञान आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के रूप में तरक्की करता जा रहा है। इसके साथ ही नई बहस छिड़ गई है कि एआई मानव जाति के लिए संकट न खड़ा करने लगे। इससे नौकरियां जाने का खतरा है। ऐसी स्थिति में हमें इस पर विचार करना चाहिए कि किस सीमा के बाद एआई के उपयोग पर पाबंदी लगे।

अमेरिका ने नहीं दिया तो हमने खुद तैयार कर लिया अपना सुपर कंप्यूटर

डॉ. विजय पांडुरंग ने बताया कि देश में फसल का अच्छा होना और न होना मौसम और बारिश पर निर्भर है। सुपर कंप्यूटर से मौसम का सटीक आकलन संभव है, लेकिन वर्ष 1991 से पहले सिर्फ अमेरिका के पास ही यह तकनीक थी।भारत ने मौसम के आकलन के लिए अमेरिका से सुपर कंप्यूटर मांगा, लेकिन उसने साफ मना दिया। ऐसे में हमने महज तीन साल में खुद का सुपर कंप्यूटर तैयार कर लिया। पुरानी यादें साझा करते हुए डॉ. भाटकर ने बताया कि उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी बेहद निराश थे, जब उनको अमेरिका से सुपर कंप्यूटर न मिलने की बात पता चली। अमेरिका अपनी पुरानी तकनीक भी इस शर्त पर देने के लिए तैयार हुआ कि सुपर कंप्यूटर सेंटर पर उनकी टीम निगरानी करेगी और इसका उपयोग सिर्फ मौसम की जानकारी के लिए ही किया जाएगा। ऐसे में राजीव गांधी ने बैठक में यह सवाल उठाया कि क्या हम अपना सुपर कंप्यूटर नहीं तैयार कर सकते। डॉ. भाटकर के मुताबिक, उन्होंने इसके लिए हामी भरी और अगले तीन साल में इसे विकसित करने का लक्ष्य रखा। सुपर कंप्यूटर के लिए अलग सेंटर स्थापित किया गया और सौ लोगों की टीम ने तीन साल के समय में महज 37 करोड़ रुपये की लागत में पूरी तकनीक विकसित कर दी। इसके बाद यह तकनीक कई अन्य देशों को भी दी गई।

HINDUSTAN PAGE 8

एलयू का दीक्षांत आज, 198 को मिलेंगे पदक

लखनऊ, कासं। लखनऊ विश्वविद्यालय के 67वां दीक्षांत समारोह 16 सितंबर सोमवार को आयोजित होगा। इसकी तैयारियां पिछले एक सप्ताह से चल रहीं हैं। मुख्य अतिथि पद्मभूषण डॉ. विजय पांडुरंग भटकर तथा अध्यक्षता राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी।

उच्च शिक्षामंत्री योगेंद्र उपाध्याय तथा राज्यमंत्री रजनी तिवारी विशिष्ट अतिथि होंगे। समारोह में 198 छात्र-छात्राओं को विभिन्न पदक तथा 10,6306 को डिग्री दी जाएगी। डिग्री पाने वालों में संबद्ध कॉलेजों के भी विद्यार्थी शामिल हैं। रविवार को विश्वविद्यालय ने डिग्री और पदकों की संख्या जारी की है। परिसर के कला प्रांगण में समारोह के लिए भव्य पंडाल तैयार किया जा चुका है। करीब 1500 लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई है। यूट्यूब पर कार्यक्रम का लाइव प्रसारण होगा। दीक्षांत समारोह के लिए रूट प्लान जारी किया है।

सत्र 2023-24 में इतनी डिग्रियां दी जाएंगी

कुल डिग्री	106306	छात्राएं 62111	छात्र 44195
एलयू कैंपस : (पीएचडी समेत)	74049	3418	3631
एलयू (न्यू कैंपस)	36877	23122	13745
हरदोई	19039	8753	10286
लखीमपुर खीरी	13019	8059	4970
रायबरेली	15171	9351	5820
सीतापुर	15151	9445	5706

प्रॉक्टर प्रो. राकेश द्विवेदी के मुताबिक सबके लिए अलग गेट से एंट्री तय की है। विद्यार्थी और आमंत्रित सदस्यों को आमंत्रण पत्र देखकर ही जाने दिया जाएगा। गेट नंबर दो से कार्य परिषद सदस्य, विशिष्ट, अति विशिष्ट, मंत्री, अफसरों का प्रवेश होगा।

ये होगा ड्रेस कोड

पुरुष अधिकारी, शिक्षक, प्राधिकारी बंद गले का काला कोट-पैंट, काला जूता पहनेंगे। महिलाएं गोल्डेन बॉर्डर क्रीम सिल्क साड़ी व क्रीम ब्लाउज। छात्राएं साड़ी और छात्र कुर्ता-पैजामा पहनेंगे।

डिग्री डिजी लॉकर में अपलोड

परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी ने बताया कि अब तक 3,40,351 विद्यार्थियों की एबीसी आईडी बन चुकी है। इनकी डिग्री डिजी लॉकर पर अपलोड कर दी गई है।

जगमगा उठा एलयू | लखनऊ विश्वविद्यालय 67वें दीक्षांत की पूर्व संध्या पर रविवार को रोशनी से जगमगा उठा।

TOI PAGE 2

1L LU degrees to be uploaded in digilocker

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: The Lucknow University has made arrangements for uploading of degrees and marksheets of its graduating students in digilocker.

Over one lakh degrees of the academic session 2023-24 will be uploaded by the chancellor and governor Anandiben Patel during the convocation ceremony to be held on Monday.

"Immediately after the convocation, hard copies of the degrees of all the students will be sent to the address given by them, through India Post. Academic Bank of Credit ID has been created for 3,40,351 students so far," said LU spokesperson Durgesh Srivastava.

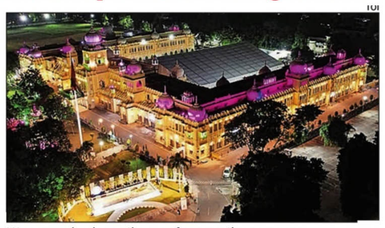
LU campus dazzles on the eve of convocation ceremony

लखनऊ विवि का दीक्षांत समारोह आज

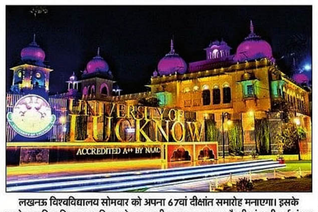

लखनऊ विश्वविद्यालय सोमवार को अपना 67वां दीक्षांत समारोह मनाएगा। इसके मद्देनजर विश्वविद्यालय परिसर को दुल्हन की तरह सजाया गया है। दीक्षांत की पूर्व संध्या पर दिन ढलते ही परिसर रंग-बिरंगी खूबसूरत रोशनी में नहा गया। - संवाद

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय का 67वां दीक्षांत समारोह सोमवार को होगा। समारोह में 198 पदक और एक लाख से ज्यादा डिग्रियां प्रदान की जाएंगी। मुख्य अतिथि के रूप में पद्मभूषण डॉ. विजय पांडुरंग भाटकर, उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय और शिक्षा राज्य मंत्री रजनी तिवारी मौजूद रहेंगी। अध्यक्षता राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी।

लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल के दिशा-निर्देश के बाद सभी विद्यार्थियों की डिग्री डिजीलॉकर में अपलोड करने की व्यवस्था चल रही है।

198 पदक और एक लाख से ज्यादा डिग्रियां प्रदान की जाएंगी

दीक्षांत समारोह के दौरान कुलाधिपति के हाथों ये डिजी लॉकर पर अपलोड की जाएंगी। इसके बाद सभी छात्रों की डिग्रियां भारतीय पोस्ट से उनके पते पर भेज दी जाएंगी।

बताया, अब तक तीन लाख 40 हजार से ज्यादा एकेडमिक बैंक क्रेडिट आईडी बनाई जा चुकी हैं। इसमें विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त किए गए क्रेडिट मौजूद रहेंगे।

JAGRAN CITY PAGE I

अमेरिका से पहले भारत बना लेगा क्वांटम कंप्यूटर : डा. पांडुरंग

जागरण संवाददाता • लखनऊ: एक समय था, जब अमेरिका ने भारत को सुपर कंप्यूटर की टेक्नोलजी देने से इन्कार कर दिया था, लेकिन देश ने स्वदेशी तकनीक से न केवल सुपर कंप्यूटर 'परम' बनाया बल्कि अब क्वांटम कंप्यूटर बनाने की शुरुआत भी कर दी।

देश में सुपर कंप्यूटर के जनक, कंप्यूटर पैरामैन एवं पद्म भूषण डा. विजय पांडुरंग भाटकर ने बता कि पांच वर्ष में क्वांटम कंप्यूटर बनाकर भारत सबको पीछे छोड़ सकता है, क्योंकि दुनिया में अभी इसके प्रोटोटाइप पर ही काम चल रहा है। यह मौजूदा कंप्यूटर से कई हजार गुना शक्तिशाली होगा। लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षा समारोह में शामिल होने आए डा. पांडुरंग ने रविवार को राजभवन में पत्रकारों से एच भूषण डा. विजय पांडुरंग भाटकर ने कहा-मोदी सरकार ने क्वांटम तकनीक को बढ़ावा देने को क्वांटम मिशन की शुरुआत की

राजभवन में पत्रकारों से बात करते पद्म भूषण कंप्यूटर वैज्ञानिक डा. विजय पांडुरंग भाटकर • जागरण

चर्चा करते हुए इसकी जानकारी दी।

चर्चा के दौरान भाटकर हुए डा. पांडुरंग ने बिल्ले दिग्गी को कहा कहा कि अमेरिका ने जब टेक्नोलजी देने से मना किया तो भारत निराश नहीं हुआ। अमेरिका ने कुछ शर्तों पर विशेषी उपग्रेशन की टेक्नोलजी देने पर सहमति दी जो तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने इसे पूर्णतौर के तौर पर लिया। इसके बाद सुपर कंप्यूटर बनने की जिम्मेदारी मुझे मिली। इसे बनने में सम्मान और भारत पर चर्चा हुई जो मेरे तीन वर्ष में सुपर कंप्यूटर विकसित करने का मतिह दिया। उस समय अमेरिकी सुपर कंप्यूटर की कीमत 37 करोड़ रुपये थी। इनमें कीमत में से भारत ने स्वदेशी तकनीक से 100 विशेषियों को टीम के साथ एक नया सेंटर और सुपर कंप्यूटर परम सीरी तैयार कर दिया।

बताकार में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत का लक्ष्य रखा है। भारत सरकार ने क्वांटम तकनीक को बढ़ावा देने के लिए क्वांटम मिशन की शुरुआत की है। मैं इस समय क्वांटम कंप्यूटर के सुपर प्रोटिकल तैयार कर रहा हूं। इसके बनने के बाद हम मौसम की सटीक भविष्यवाणी कर सकेंगे। कृषि से लेकर हर क्षेत्र में इसके बाद क्रांतिकारी परिणाम होंगे।

अमेरिका में तकनीक को सीख भारत में दें विस्तार

एआई से पनपने वाले प्रभाव पर पूछे गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया इसके प्रभाव और इसे परिणामों को लेकर चिंता कर रही है। एआई की सीमा बढ़ाना इंटरनेशनल को ही तय करनी होगी। उन्होंने पूछा की सवाल दी कि ये अमेरिका जब। जहां से तकनीकी सीखकर भारत में विस्तार दे। भारत में भविष्य बेहतर है।

'स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं मोबाइल टावर'

जासं • लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी एवं तकनीकी संकाय में इंजीनियर्स डे पर विशेषज्ञों ने विकास में अभियंताओं के योगदान पर चर्चा की। मुख्य वक्ता दूर संचार विभाग में डीडीजी (अनुपालन) इंजीनियर अमित कुमार ने मोबाइल टावर को लेकर मिथक को दूर किया। वक्ता कि मोबाइल टावर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं होते, क्योंकि ये सभी नियमों के अनुसार सख्त नियमों में रहते हैं।

एडीजी (अनुपालन) इंजीनियर अमित कुमार ने उदाहरण देते हुए बताया कि मोबाइल टावर से निकलने वाले विकिरणों की स्वचाना-पूर्वक नियंत्रणी की जाती है। इससे पहले इलेक्ट्रानिक्स और संचार इंजीनियरिंग विभाग के समन्वयक डा. सिद्धार्थ सिंह ने कहा कि भारत के यूनिवार्टी होंगे, उद्योग और नवाचार को विकसित करने में अभियंताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अभियांत्रिकी संकाय के डीन प्रो. एके सिंह ने सर एम विश्वेश्वरैया को याद करते हुए कहा कि उनका योगदान देश के विकास में अमूल्य है। वैज्ञानिक अभियंता उन सिद्धांतों को वास्तविकता में बदलते हैं। विश्वविद्यालय का 'विश्वकर्मा' आडिटोरियम अभियंताओं के निर्माण और समस्याओं के समाधान में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका की याद दिलाता है।

कार्यक्रम में दूरसंचार विभाग के डीडीजी इंजी. अमित कुमार को सम्मानित किया गया • प्रेसि

i-NEXT PAGE 4

67वें दीक्षा समारोह में आज मेडल्स की बरसात

PICS: DAINIK JAGRAN-I NEXT

LUCKNOW (15 SEP): सोमवार को होने वाले दीक्षा समारोह के लिए लखनऊ यूनिवर्सिटी पूरी तरह तैयार हो गई है। मेधावियों को 198 मेडल दिए जाएंगे। इनमें 177 गोल्ड, दो सिलवर, 11 ब्रांज मेडल और 8 बुक प्राइज होंगे। सर्वाधिक 13 मेडल एमएससी गणित की छात्रा शैलजा चौरसिया को मिलेंगे, उन्हें 10 गोल्ड, दो चांसलर सिलवर और एक ब्रांज मेडल मिलेगा. समारोह में मुख्य अतिथि पद्मभूषण भारतीय कंप्यूटर वैज्ञानिक और सुपर कंप्यूटर के जनक डा. विजय पाडुरंग भाटकर मेधावियों को पदक देकर प्रोत्साहित करेंगे.

सबका दिल जीत रहीं एलयू की सजावट.

पद्मभूषण डॉ. विजय पाडुरंग भाटकर मुख्य अतिथि रहेंगे

खूब मिलेंगे मेडल

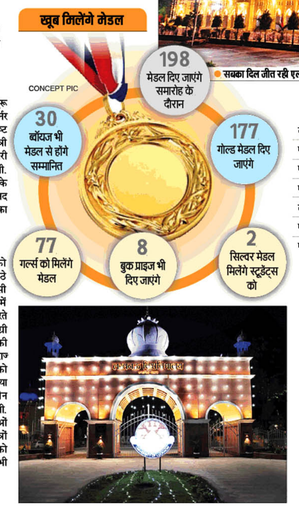

सुबह 11 बजे से शुरुआत

दीक्षा समारोह सुबह 11 बजे से शुरू होगा. समारोह की अध्यक्षता गवर्नर आनंदीबेन पटेल करेंगी. विशिष्ट अतिथियों में उच्च शिक्षा मंत्री योगेश उपाध्याय और रजनी तिवारी भी विद्यार्थियों को संबोधित करेंगी. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के निदेशक नीलेश एम देसाई को मानद उपाधि दी जाएगी. 11 पुस्तकों का विमोचन भी किया जाएगा.

अपलोड होंगी डिग्रियां

दीक्षा समारोह में स्टूडेंट्स को डिजिलाकर के माध्यम से घर बैठे डिग्री उपलब्ध कराई जाएगी. वीसी प्रो. आलोक कुमार राय के निर्देशन में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए डिजिलाकर में छात्रों को डिग्री और मार्कशीट अपलोड करने की व्यवस्था की गई है. सोमवार को राज्यपाल के हाथों सभी डिग्रियों को डिजिलाकर में अपलोड कर दिया जाएगा. एक लाख छह हजार तीन सौ छह डिग्रियां अपलोड की जाएंगी. इसमें 62 हजार से अधिक छात्रों की डिग्री शामिल है. डिग्रियों को भारतीय पोस्ट से उनके पते पर भी भेजा जाएगा.

सर्वाधिक मेडल पाने वाले मेधावी

कोर्स	नाम	मेडल
एमएससी गणित	शैलजा चौरसिया	13 मेडल
एमए एआईएच	रीमा चौधरी	08 गोल्ड, एक बुक प्राइज
एलएलबी तीन साल	वैष्णवी मिश्रा	09 गोल्ड मेडल
बीए	जूली पटेल	06 गोल्ड मेडल
एमएससी फिजिक्स	हार्दिक गुप्ता	06 गोल्ड मेडल
एमपीए	अनुराग सिंह	05 गोल्ड मेडल

- मुख्य अतिथि पद्मभूषण वैज्ञानिक और सुपर कंप्यूटर के जनक डा. विजय पाडुरंग पदक देकर प्रोत्साहित करेंगे
- राज्यपाल के हाथों सभी डिग्रियों को डिजिलाकर में अपलोड कर दिया जाएगा

क्वांटम कम्प्यूटर एक हजार गुना तेज होगा: डॉ. पांडुरंग

तैयारी

लखनऊ, संवाददाता। वर्तमान में एक क्वांटम कम्प्यूटर पर काम किया जा रहा है। यह एक सुपर कंप्यूटर की तुलना में 1000 गुना तेजी से कम्प्यूटिंग करने की क्षमता रखेगा। हमने तीन साल के काम के बाद इसका प्रोटोटाइप बनाया है। अगले पांच साल में क्वांटम कम्प्यूटर बनाने की कोशिश में हैं। यह बातें कम्प्यूटर वैज्ञानिक, परम सुपर कम्प्यूटर के जनक और नालंदा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति पद्मभूषण डॉ. विजय पांडुरंग भाटकर ने कहीं। वह लखनऊ विश्वविद्यालय के 67वें दीक्षांत समारोह की पूर्व संध्या पर राजभवन में आयोजित एक प्रेस वार्ता को सम्बोधित कर रहे थे।

डॉ. भाटकर ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और परम कम्प्यूटर को बनाने की यात्रा समेत कई विषयों पर बात की। पद्मभूषण डॉ. विजय पांडुरंग भाटकर ने एनईपी 2020 से युवाओं को लाभ बताया। उन्होंने कहा कि एनईपी के जरिए युवाओं का ध्यान शोध-केन्द्रित कार्यक्रमों पर बढ़ा है। अब राष्ट्रीय इनोवेशन कार्यक्रम को सेट करने की आवश्यकता है जिससे युवाओं को फायदा होगा।

उन्होंने एआई के भविष्य और उससे जुड़ी समस्याओं पर भी अपना नजरिया रखा। कहा कि यदि सही दिशा में एआई का उपयोग किया जाए, तो यह बहुत उपयोगी हो सकती है। लेकिन आजकल इसके लिए एक कोड ऑफ कंडक्ट को सेट करने के बारे में भी बहस चल रही है।

डॉ. पांडुरंग ने कहा कि युवा ज्ञान प्राप्त करने के लिए विदेश जा सकते हैं लेकिन पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें देश में लौटना चाहिए। क्योंकि भविष्य भारत में है।

पद्मभूषण डॉ. विजय पांडुरंग भाटकर ने राजभवन में प्रेस वार्ता की।

अमेरिका ने टेक्नोलॉजी साझा करने से मना किया

डॉ. पांडुरंग ने बताया कि भारत सरकार ने सुपर कम्प्यूटर की टेक्नोलॉजी प्राप्त करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका से कोशिश की, लेकिन उन्होंने इनकार किया। हमें पूछा गया कि हम सुपर कम्प्यूटर कितने समय में बना सकते हैं। कुछ गणना करने और अपनी इंस्टीट्यूट पर विश्वास करने के बाद मैंने उनसे कहा कि हम तीन साल में प्रोजेक्ट पूरा करेंगे और हमने सुपर कम्प्यूटर के ही मूल्य में तकनीक विकसित की।

'With new ideas, economy of future will be innovation-based'

*Computer scientist, IT expert and educationist **Vijay Pandurang Bhatkar** believes that the development of education infrastructure should be based on innovation as well as investment and cites Silicon Valley as the best example. In conversation with **Mohita Tewari**, he said that the credit for the growth of the majority of developed cities goes to their universities. In the same way, the future of Uttar Pradesh depends on the development of its education infrastructure, says the expert, who is in the city to attend the convocation ceremony of the Lucknow University. Excerpts:*

The TOI Interview

In the times of artificial intelligence, every student is running after courses in computer sciences, especially in engineering. How do you see it?

■ Most students are currently opting for computer science, artificial intelligence and other advanced computing because there is a lot of innovation in this field. New softwares and ideas are emerging, and job opportunities in these areas are vast. The future economy is innovation-based and students realize it well.

You are considered as the architect of India's national initiative in supercomputing where you led the development of Param supercomputers. Please share some memories of supercomputer days.

■ The good or bad harvest in the country depends on weather and rain. Accurate assessment of weather is possible with supercomputers. However, before 1991, only America had this technology. India asked America for a supercomputer to assess the weather, but it flatly refused. In such a situation, we made our own supercomputer in just three years. The then Prime Minister Rajiv Gandhi was very disappointed when he came to know about not getting a supercomputer from America. The US agreed to give its old technology but on the condition that their team would monitor the supercomputer centre and it will be used for weather information only. Rajiv Gandhi asked if we could not develop our own supercomputer. I told him that we can develop supercomputers and set a target of three years. A separate centre was established for supercomputers and a team of hundred people developed the entire technology in three years at a cost of only 37 crore rupees. After this, this technology was also given to many other countries.

How do you see AI and quantum computers?

■ Science is progressing in the form of Artificial Intelligence. Along with this, a new debate has started that AI should not create a crisis for mankind. There is a danger of job loss. In such a situation, we should think about the limit of the use of AI. Quantum computer will be ready in five years which will be thousand times more capable than a supercomputer. Supercomputers and quantum computers can be used in various fields ranging from weather, defence, space and even modern cars.

लखनऊ विश्वविद्यालय का दीक्षा समारोह आज

सुपर कंप्यूटर के जनक पद्मभूषण डा. विजय पांडुरंग भातकर मुख्य अतिथि होंगे

जागरण संवाददाता • लखनऊ: इंतजार की घड़ी खत्म हुई। सोमवार को दीक्षा देने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय पूरी तरह से तैयार है। 67वें दीक्षा समारोह में अपने-अपने विषय में टापर मेधावियों को 198 पदक दिए जाएंगे। इनमें 177 स्वर्ण, दो रजत, 11 कांस्य पदक व आठ बुक प्राइज होंगे।

मेधावियों में सबसे अधिक एम.एससी. गणित की छात्रा शैलजा चौरसिया को 13 पदक मिलेंगे। इनमें 10 स्वर्ण, दो चांसलर रजत और एक कांस्य पदक शामिल है। दीक्षा समारोह में मुख्य अतिथि पद्म भूषण भारतीय कंप्यूटर वैज्ञानिक और सुपर कंप्यूटर के जनक डा. विजय पांडुरंग भातकर मेधावियों को पदक देकर प्रोत्साहित करेंगे।

लखनऊ विश्वविद्यालय के दीक्षा समारोह के लिए भव्य पंडाल सजाया गया है। सुबह 11 बजे से मुख्य समारोह शुरू हो जाएगा। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी। विशिष्ट अतिथियों में उच्च शिक्षा मंत्री योगेश उपाध्याय और रजनी तिवारी भी विद्यार्थियों को संबोधित करेंगी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के निदेशक नीलेश एम देसाई को मानद उपाधि दी जाएगी। विद्यार्थियों को यह भी संबोधित करेंगे। समारोह में मेधावियों को पदक और उपाधि देने के साथ ही 11 पुस्तकों का विमोचन भी किया जाएगा। इन पुस्तकों को विश्वविद्यालय और संबद्ध कालेजों के शिक्षकों ने लिखी है।

लखनऊ विश्वविद्यालय में दीक्षा समारोह के लिए की गई सजावट • जागरण

डिजिलाकर पर अपलोड होंगी डिग्रियां

दीक्षा समारोह में छात्र-छात्राओं को डिजिलाकर के माध्यम से घर बैठे डिग्री उपलब्ध कराई जाएगी। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय के निर्देशन में सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए डिजिलाकर में छात्रों की डिग्री और मार्कशीट अपलोड करने की व्यवस्था की गई है। सोमवार को राज्यपाल के हाथों सभी डिग्रियों को डिजिलाकर में अपलोड कर दिया जाएगा।

एक नजर में पदक

कुल पदक	198
स्वर्ण	177
रजत	दो
कांस्य	11
बुक प्राइज	आठ
पदक पाने वाली छात्राएं	77
पदक पाने वाले छात्र	30

सबसे ज्यादा पदक पाने वाले मेधावी

कोर्स	नाम	पदक
एम.एससी. गणित	शैलजा चौरसिया	13 पदक
एम.ए.-एआइएच	रीमा चौधरी	आठ स्वर्ण, एक बुक प्राइज
एलएल.बी. तीन वर्षीय	वैष्णवी मिश्रा	नौ स्वर्ण
बी.ए.	जूली पटेल	छह स्वर्ण
एम.एससी. फिजिक्स	हार्दिक गुप्ता	छह स्वर्ण
एम.पी.ए.	अनुराग सिंह	पांच स्वर्ण

समारोह का लाइव प्रसारण

लखनऊ: सोमवार को दीक्षा समारोह का यूट्यूब पर लाइव प्रसारण किया जाएगा। रजिस्ट्रार विद्यानंद त्रिपाठी ने लवि से संबद्ध लखनऊ, हरदोई, लखीमपुर, सीतापुर, रायबरेली के महाविद्यालयों में भी दिखाने के लिए कहा है। कालेजों को लिंक भी जारी किया।

परिसर की सुरक्षा कड़ी

लखनऊ विश्वविद्यालय में दीक्षा समारोह को शांतिपूर्ण और सुव्यवस्थित करने के लिए पूरे इंतजाम किए गए हैं। गेट नंबर दो से विशिष्ट अतिथियों को प्रवेश मिलेगा। विवेकानंद द्वार संख्या तीन से शिक्षक, पदक पाने वाले छात्रों के माता-पिता और मीडिया का प्रवेश है। पंडाल में जाने के लिए भौतिक विज्ञान और हिंदी के बीच का रास्ता निर्धारित है। वीआइपी वाहनों की पार्किंग खेल मैदान में होगी।

PIONEER PAGE 3

लखनऊ विश्वविद्यालय का 67वां दीक्षान्त समारोह आज

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के 67वां दीक्षांत समारोह 16 सितंबर सोमवार को आयोजित होगा। समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर पद्मभूषण डॉ. विजय पांडुरंग भटकर होंगे। जबकि समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल आनंदीबेन पटेल करेंगी। उच्च शिक्षामंत्री योगेंद्र उपाध्याय तथा राज्यमंत्री रजनी तिवारी विशिष्ट अतिथि होंगे।

समारोह में 198 छात्र-छात्राओं को विभिन्न पदक तथा 10,6306 को डिग्री दी जाएगी। डिग्री पाने वालों में संबद्ध कॉलेजों के भी विद्यार्थी शामिल हैं। रविवार को विश्वविद्यालय ने डिग्री और पदकों की संख्या जारी की है। परिसर के कला प्रांगण में समारोह के लिए भव्य पंडाल तैयार किया जा चुका है। करीब 1500 लोगों के बैठने की व्यवस्था की गई है। यूट्यूब पर कार्यक्रम का लाइव प्रसारण होगा। दीक्षांत समारोह के लिए रूट प्लान जारी किया है।

विशेष रोशनाय किए गए हैं। यूट्यूब पर कार्यक्रम का लाइव प्रसारण होगा। परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी ने बताया कि अब तक 3,40,351 विद्यार्थियों की एबीसी आईडी बन चुकी है। इनकी डिग्री डिजी लॉकर पर अपलोड कर दी गई है। सोमवार को दीक्षा समारोह में सभी के लिए ड्रेस कोड लागू किया गया है। पुरुष शिक्षक, प्राधिकारी, अधिकारी, कर्मचारी, कोट-पैंट, काला जूता और महिला शिक्षिक, अधिकारी, प्राधिकारी गोल्डेन बॉर्डर सहित क्रीम सिल्क साड़ी, क्रीम ब्लाउज व काला जूता पहनना होगा। छात्राएं साड़ी तथा छात्र कुर्ता-पैजामा पहनेंगी।

विद्यार्थियों की डिग्री डिजी लॉकर में अपलोड: परीक्षा नियंत्रक विद्यानंद त्रिपाठी ने बताया कि अब तक 3,40,351 विद्यार्थियों की एबीसी आईडी बन चुकी है। इनकी डिग्री डिजी लॉकर पर अपलोड कर दी गई है। सोमवार को आयोजित दीक्षांत में लखनऊ और संबद्ध हरदोई, लखीमपुर खीरी, रायबरेली और सीतापुर के कॉलेजों के 106306 मेधावियों को डिग्री दी जाएगी।

इस कोड लागू

लखनऊ विश्वविद्यालय में सभी के लिए ड्रेस कोड लागू किया गया है। पुरुष शिक्षक, अधिकारी, प्राधिकारी सदस्य बंद गले का काला कोट-पैंट, काला जूता और महिला शिक्षिक, अधिकारी, प्राधिकारी गोल्डेन बॉर्डर सहित क्रीम सिल्क साड़ी, क्रीम ब्लाउज व काला जूता पहनना होगा। छात्राएं साड़ी तथा छात्र कुर्ता-पैजामा पहनेंगी।

इन रास्तों से जाएंगे अतिथि और आयोजक

लखनऊ विश्वविद्यालय के एन.पी. बेल हॉल में वाणिज्य विभाग के भाजपाल देवराज सोम पीठ के तत्वावधान में उद्यमिता के भारतीय परिप्रेक्ष्य पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय और प्रॉक्टर प्रोफेसर सोम पीठ के निदेशक प्रो. राम विनोद के संयोजन में आयोजित किया गया। व्याख्यान का उद्देश्य छात्रों को उद्यमिता और इसके संदर्भों के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। मुख्य वक्ता प्रो. भीराम त्रिपाठी ने भारतीय देवराज के जीवन से सम्बन्धित कुछ अंश साझा किए और एक उम्मुक्त जीवन और नेता के रूप में उनकी भूमिका पर जोर दिया। इसमें बोरोकराटी, ग्रामीण प्रबंधन, स्वदेशि संसाधनों का कम उपयोग, क्षेत्रीय आवश्यकता और भूगत्त मंडुरा को व्यवसाय जैसे मुद्दों को और इंगित करते हुए बताया कि

उद्यमिता के भारतीय परिप्रेक्ष्य पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के ए.पी. बेल हॉल में वाणिज्य विभाग के भाजपाल देवराज सोम पीठ के तत्वावधान में उद्यमिता के भारतीय परिप्रेक्ष्य पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय और प्रॉक्टर प्रोफेसर सोम पीठ के निदेशक प्रो. राम विनोद के संयोजन में आयोजित किया गया। व्याख्यान का उद्देश्य छात्रों को उद्यमिता और इसके संदर्भों के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। मुख्य वक्ता प्रो. भीराम त्रिपाठी ने भारतीय देवराज के जीवन से सम्बन्धित कुछ अंश साझा किए और एक उम्मुक्त जीवन और नेता के रूप में उनकी भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने बोरोकराटी, ग्रामीण प्रबंधन, स्वदेशि संसाधनों का कम उपयोग, क्षेत्रीय आवश्यकता और भूगत्त मंडुरा को व्यवसाय जैसे मुद्दों को और इंगित करते हुए बताया कि

अगले तीन साल में भारत में आ जायेगा क्वांटम कम्प्यूटर

- रीमन सुपर कम्प्यूटर देने के लिए तैयार थे, पर वो शर्तें लगा रहे थे: भारत में सुपर कम्प्यूटर का आविष्कार करने वाले वैज्ञानिक डॉ. विजय पी. पांडुरंग का खुलासा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

सुपर कम्प्यूटर का आविष्कार करने वाले देश के वैज्ञानिक पद्मभूषण डॉ. विजय पी. पांडुरंग ने कहा कि हम क्वांटम कम्प्यूटर पर काम कर रहे हैं। क्वांटम कम्प्यूटर के बारे हम किसी भी कम्प्यूटर की गति को कई गुना बढ़ा सकते हैं। उन्होंने बताया कि हमने पांच साल का टेर्म पेपर तैयार किया है। क्वांटम कम्प्यूटर का प्रोटोटाइप तैयार है। तीन साल के अंदर भारत के पास अपना क्वांटम कम्प्यूटर होगा। डॉ. पांडुरंग सोमवार को प्रसादिक लखनऊ विश्वविद्यालय के 67वां दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर शामिल होने परिसर की राजधानी पहुंचे थे।

भारत में सुपर कम्प्यूटर की पहल को लेकर राजभवन में बातचीत के दौरान डॉ. पांडुरंग ने ख